हाजिरजवाब स्वामी विवेकानन्द

कैन्टीन मे करने भोजन
बैठे अंग्रेज अध्यापक पीटर
उनके पास गये बैठ
थाली लेकर विवेकानन्द ।

पीटर को गोरे होने का
था बहुत ही अहंकार
बोला " भोजन कर नही सकते
काला सुअर और सफेद
तोता बैठके एकसाथ "।

विवेकानन्द थे बहुत होशियार
बोले "सर ,आप चिंता न करें
मैं जा रहा हूं उड़कर"
पीटर हुआ बहुत क्रोधित
पर उसके ही बुने जाल मे
विवेकानन्द ने कर दिया
पीटर को साबित सुअर।

अगली बार बदले की भावना
से पीटर ने विवेकानन्द
से पूछा "मानो सड़क पर जा रहे हो ,
रुपये का थैला और ज्ञान का थैला
दोनो रखा हो तो ,लोगे कौन सा थैला "?

Scanned with OKEN Scanner

विवेकानन्द बोले "रुपये का थैला"
यह सुनकर पीटर ने
अपनी श्रेष्ठता दिखाने के लिये
कहा कि "मैं होता तो
चुनता ज्ञान का थैला "
विवेकानन्द तपाक से
बोले " ठीक ही तो है,
जिसके पास जो कम है,
वो लेगा वैसा ही थैला ।
पीटर था अचम्भित
अपने ही जाल मे फसकर
मन ही मन हुआ
बहुत ही क्रोधित

पीटर था बहुत गुस्से में
विवेकानन्द के परीक्षा
के उत्तर पुस्तिका में
"इडियट "टिप्पणी दी अंग्रेजी मे
लेकिन दिया नही कोई अंक
पर फिर भी विवेकानन्द थे शांत
उन्होंने पीटर को बताया कि
"आपने अपने हस्ताक्षर तो दिए हैं,
लेकिन नही दिया कोई अंक "
विवेकानन्द ने कर दिया था
पीटर को ईडियट साबित ।
पीटर सुनकर थे
बहुत अचम्भित और अपमानित
अब वो हो गये पुरे चुप
उनके सामने थे अजेय
हाजिरजवाब विवेकानन्द।

सुबीर कुमार भट्टाचारजी

Scanned with OKEN Scanner